मस्तिष्क में पुरानी आदत छोड़ने की शक्ति है

– आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 3 मार्च, 2009।

प्रिय और हित इन दो शब्दों का वि-लेषण करते हुए आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने श्रीमद मघवा समवरण में उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि सामान्यता मनुष्य के शरीर की पांचों इन्द्रियों को प्रियता अच्छी लगती है। जो प्रिय हो अच्छा लगता है, किंतु इस बात पर ध्यान कम दिया जाता है कि आजकल के बच्चे जब टीवी देखने लगते हैं अच्छा लगता है प्रिय है। उसमें इतना विवेक नहीं जागा कि हितकर है या नहीं। माता-पिता का कर्त्तव्य होता है कि बच्चे को प्रिय के साथ बात समझाए। जो टीवी में से रश्मियां निकलती है वे घातक होती जो स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाली होती है। जब प्रियता की चेतना जाग जाती है तब हित की बात गौण हो जाती है। यक्ति नशे का सेवन करता है, उसे वह प्रिय लगता है, किंतु प्रियता बहुत हानि करती है उसे बदला भी जा सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी के संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि ''जब आचार्य तुलसी जयपुर विराज रहे थे उस समय राजस्थान पुलिस एकेडमी में दो सप्ताह का शिविर था। मैं भी उस शिविर में रहा संत बहुत सारे साथ में थे हमने प्रयोग करवाए आचार्य तुलसी बाहर विराज रहे थे। शिविर में सौ से ज्यादा लोग भाग ले रहे थे। एक थानेदार मेरे पास आकर बोला कि मैं दिन में पचास सिगरेट पी लेता हूं। मैंने पूछा तुम छोड़ना चाहते हो उसने कहा मैं छोड़ना चाहता हूं। शिविर में भाग लेने के पांच सात दिन बाद आया मैंने पूछा क्या स्थिति है - बोला अब सीगरेट पी नहीं सकता। मेरे साथी ने पी मुझे उबाक होने लग गई।'' यह है परिवर्तन, नई आदत का प्रत्यारोपण किया जा सकता है। मस्तिष्क में छोड़ने की शक्ति है और नई आदत का निर्माण करने की शक्ति है। पुराना आदत को बदला जा सकता है। कब जब हित की साधना कराने वाला हो। कोरी प्रियता की बात समस्या पैदा करती है।

इन्द्रियों की लालसा, इन्द्रियों की चपलता इस कोटि तक न ले जाएं कि जिससे जीवन की हानी, परिवार की हानि, संघटन की हानि और बुरी आदतों का वह शिकार बन कर बुराई में चला जाता है। इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति नई आदतों का निर्माण करे जो हितकर, श्रेयकर हो।

इस अवसर पर नौरतमल नाहटा कविता के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

बीदासर, 2 मार्च।

युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के सान्निय में प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी द्वारा जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता के प्रथम चरण का परिणाम प्रस्तुत कर विधिवत प्रेरणा की गर्ठ। इस प्रतियोता में कुद 2118 प्रतियोगिता ने अपना पंजीकरण करवाया जिसने से 1028 प्रतिभागियों में निर्धारित प्रश्नोत्तरी को पूर्ण कर जीवन विज्ञान अकादमी को प्रेषित किया।

प्रश्नोत्तरी के जांच कार्य में समणीवृन्द एवं जीवन विज्ञान अकादमी के निदेशक एवं प्रशिक्षकों का सराहनीय योगदान रहा। सघन जांचकार्य पूर्ण करने पश्चात् 1028 में से प्रथम 100 प्रतिभागियों को वरीयता क्रम के अनुसार इस प्रतियोगिता के द्वितीय चरण के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। 100 प्रतिभागियों में अधिकतम अंक 500 में से 496 एवं न्यूनतम अंक 483 रहे। सम्पूर्ण परिणाम वरीयता क्रम से प्राप्तांक सहित।

ूण्जमतंचंदजीपदविण्बवउ पर देखे जा सकते हैं।

– अशोक सियोल

99829 03770